B.A. II Hons.

हिन्दी साहित्य के इतिहास का कालविभाजन : शेषांश

डॉ॰ सतीश चन्द्र पाठक

JANUARY' 18

Wk-03 Day 019-346

FRIDAY 19

अभिव्यक्ति इनके साहित्य में हुआ है वह अद्वितीय है। इस वर्णन के आगे हिन्दी साहित्य अथवा भारतीय साहित्य का कोई कवि नहीं टिक पाता। बाल मन की एक-एक भावों का, तज्जन्य एक-एक क्रियाओं का जैसा स्वाभाविक वर्णन महाकवि सूरदास ने किया है वह अत्यन्त दुर्लभ है। लगता है इसीलिए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है- "सूरदास अपनी बन्द आँखों से बाल हृदय का कोना-कोना झांक आए हैं।" सूरदास ने इसके अतिरिक्त संयोग एवं विप्रलंभ शृंगार का मार्मिक वर्णन किया है। विशेषकर वियोग शृंगार का भ्रमरगीत तो हिन्दी में दूसरा नहीं लिखा जा सका।

सूरदास की ही भांति कबीरदास ने जीवन के चरमसत्य को अपने काव्य के माध्यम से संपूर्ण अभिव्यक्ति दी है। एक तरफ वे सामाजिक रूढ़ियों और अंधपरम्पराओं पर प्रहार करते हैं तो जीवन का सरलता से जीने का सम्यक् ज्ञान भी प्रस्तुत करते हैं। उनका काव्य, साधना की साहित्यिक अभिव्यक्ति है। उन्होंने साखी, शबद और रमैनी के माध्यम से सृष्टि के अनदेखे रहस्यों को सरल शब्दों में उकेरने का प्रयास किया है। इसी प्रकार संत काव्य परम्परा के प्रायः सभी कवियों ने वैयक्तिक साधनाओं के साथ ही सामाजिक स्थितियों का विशद वर्णन किया है तथा उसमें परिमार्जन एवं अनुकूलन का प्रयास किया है। चूंकि प्रायः संत कवि समाज के दलित वर्ग से आते थे अतः सवर्ण मानसिकता का उन्हें प्रत्यक्ष एवं कटु अनुभव हुआ था। इसकी चोट उनके मन पर बहुत ही गहरी थी। यही कारण है कि उनकी रचनाओं में वर्ण व्यवस्था एवं जातीय व्यवस्था पर गहरी चोट की है। विशेषतः कबीर की रचनाएं इस तरह की कटूक्तियों से भरी पड़ी हैं। उन्होंने जीवन के चरम सत्यों को जानने और समझने की वकालत की। इसके साथ ही जीवन में प्रेम की महत्ता का भी प्रतिपादन किया। ज्ञान प्राप्ति की उत्कटता के साथ ही प्रेम की मार्मिक अनुभूतियों का विरल चित्रण उनके काव्य की विशेषता है। संत कवि मूलतः रहस्यवादी थे। जिस ज्ञान की प्राप्ति उन्हें हुई थी

notes

Phone

email

website

उसे वे सरल शब्दों में अभिव्यक्ति देना चाहते थे। किन्तु उनके पास शब्दों का अभाव था, क्योंकि उन लोगों ने विधिवत शिक्षा नहीं ली थी। संतों ने साहचर्य से प्राप्त ज्ञान की अभिव्यक्ति में इसीलिए उन्होंने उलटबांसियों का प्रयोग किया है। ऐसा इसलिए कि आत्मा और परमात्मा के संबंधों तथा आत्मबोध की प्रक्रिया अत्यंत जटिल है। इसी जटिलता को अपने सरल सीधे शब्दों में अभिव्यक्ति उनके लिए अत्यंत दुरूह एवं दुष्कर कार्य था। इसीलिए ने बरसे कंबल भीगे पानी जैसी विरोधाभासी उक्तियों के माध्यम से उस जटिलता को अभिव्यक्त करने का प्रयास उनके काव्यों में दिखता है। हिंदी साहित्य के इतिहास की यह अनोखी घटना थी कि जन सामान्य के जीवन का व्यक्ति जनभाषा में अपनी बात लोगों के बीच रख रहा था। इसके पूर्व तो ऐसा संभव ही नहीं था क्योंकि साहित्य, कला और काव्य अभिजात वर्ग की थाती थी। इस दृष्टि से भी यह कालखंड भारतीय इतिहास में केवल साहित्यिक दृष्टि से ही नहीं सामाजिक दृष्टि से भी उल्लेखनीय एवं विशिष्ट है।

इसी कालखंड में प्रेमाख्यानक काव्य की भी रचना हो रही थी जिसे सूफी प्रेमाख्यानक काव्यधारा के नाम से अभिहित किया जाता है। इसके प्रतिनिधि कवि मलिक मुहम्मद जायसी थे। इनके अतिरिक्त मंझन, कुतुबन इत्यादि अन्य कवियों ने भी इस धारा की समृद्धि में अपना योगदान दिया था। इस काव्यधारा की विशेषता थी कि इसकी रचना मसनवी शैली में हुई। इस काव्यधारा के समस्त कवि मुसलमान थे किंतु सारी रचनाएँ हिंदी